श्रीः

चौपट-चपेट।

प्रहसन।

(लम्पटों की दुर्दशा का मनोहर चित्र।)

जिसको

श्रीकिशोरीलालगोस्वामी ने

बनाया।

"पतिर्हि देवो नारीणां पतिर्बन्धुः पतिर्गतिः।
पत्युर्गतिसमा नास्ति दैवतं वा यथा पतिः॥"

(व्यासः)

श्रीछबीलेलालगोस्वामी ने
श्रीसुदर्शनप्रेस, वृन्दावन से
छापकर प्रकाशित किया।

द्वितीयबार १००० | संवत् १९७५ वैक्रम, सन् १९१८ ईस्वी | मूल्य केवल चार आने